चतुर्थ अध्याय

" सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ ।"

चतुर्थ अध्याय
''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ''

4.1 प्रस्तावना :-

गुफाओं में रहनेवाले आदिम मानव से लेकर आधुनिक मानव तक सभी 'समस्या' जैसे छोटे शब्द से जुडे हुये है। कोई इससे पलभर भी छुटकारा पा नहीं सकता। समस्या हमारे जीवन का एक अंग बन गया है। सभी पर उसका शासन चल रहा है। 'समस्या' इस शब्द को जानना, समझना और समझाना एक पहेली-सी बन जाती है।

4.2 समस्या अर्थ :-

चित्रकाव्य के सात भेदों से 'समस्या' भी एक है, इसका लक्षण निरूपित करते हुए पुराणकार ने कहा है -

''सुशिलष्टवद्यमेंक यन्नानाश्लोकोश निर्मितम
सा समस्या परस्या ऽऽ त्मपस्यो: कृति संकरात।''[1]

संस्कृतचार्यों ने समस्या का केवल यही अर्थ लगाया है कि ''समस्या - वह है - जिसमें अपनी एवं दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो।''[2] हिन्दी विश्वकोषकार ने इस अर्थ के साथ-साथ समस्या का अर्थ - ''संघटन, मिश्रण मिलने की क्रिया, कठिन अवसर या प्रसंग''[3] लिया है। मानक अंग्रेजी हिन्दी कोशकार ने - ''उलझन, कठिन प्रश्न, पहेली, दुर्बोध बात, व्यूह, प्रहेलिका'' बताया है। करूणापति त्रिपाठी ने भी - ''कठिन अवसर या प्रसंग'' के ही अर्थ में स्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समस्या एक उलझन एवं कठिन अवसर या प्रसंग के सिवाय और कुछ भी नहीं है। समस्याओं को जानने के लिए समग्र व्यापक दृष्टि की आवश्यकता है। समस्या एक जटिल प्रक्रिया है। एक समस्या दूसरी समस्या को जन्म देती है। एक समस्या द्वारा अनेक समस्याओं का उद्भावक होता है। मानो रक्तबीज, राक्षस जैसा वरदान उन्हें प्राप्त हो गया है।

4.3 विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ :-

भारतीय समाज में प्रमुख रूप से सामाजिक समस्या, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, सांस्कृतिक समस्या, धार्मिक समस्या और मनोवैज्ञानिक समस्या प्रमुख रूप से दिखायी देती हैं। यहाँ नाटकों में प्राप्त उपर्युक्त समस्याओं का विभाजन करके उसका विश्लेषण किया है। इन समस्याओं की चर्चा उनके नाटकों में हमें देखने मिलती हैं।

4.3.1 सामाजिक समस्याएँ -

सामाजिकता में नैतिक मूल्य, संस्कृति आदि के अनुसार मानव की जीने की प्रणाली का प्रयोग जब समाज में अपने आचरण के लिए नहीं होता और दूसरे विचारों को अपने आचरण में लाया जाता है तब सामाजिक दृष्टि से बाधा का कारण बन जाता है। मानव - मानव के संबंधो के कारण, जाति-वंश-धर्म के आधार पर संघर्ष, यौन संबंध और सामाजिक नैतिकता आदि के कारण सामाजिक समस्या निर्माण होती है। मानसिक विकृति और आर्थिक अभाव के कारण भी सामाजिक समस्याएँ निर्माण हो सकती हैं।

जाति-पाति की समस्या, स्त्री - स्वातंत्र्य की समस्या, रीतिरिवाज, रूढियाँ, परपराएँ और उनका परिवर्तन, संस्कृति आदि सामाजिक समस्याओं का चित्रण निम्नलिखित प्रकार से किया गया है -

4.3.1.1 उच्चता और वंश की समस्या -

प्राचीन काल की निम्न जातियाँ अन्याय और अत्याचार सहती आयी हैं। म. गांधी ने इस समस्या को हल करने के लिए पूरी कोशिश की, इस में उनकी मानवता की भावना थी। पर स्वतंत्रता के बाद भी हरिजनों की सामाजिक परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी वंश के नाम पर, धर्म के नाम पर और जाति के नाम पर हर जगह इन बातों को लेकर नयी-नयी समस्या हमारे सामने खडी हो रही है। यहाँ पर सेठ गोविन्ददास के हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह नाटक में उपर्युक्त समस्या देखने को मिलती है।

'हर्ष' नाटक में वर्ध्दन वंश और गुप्तवंश का प्रमुख रूप से संघर्ष दिखायी देता है। हर्ष का भाई राजवर्ध्दन की हत्या कुमारगुप्त ने की थी। वंश के पारस्पारिक आंतरिक मतभेदों से और परस्पर वैचारिक मतभेदों के कारण गुप्तवंशज शशांक नरेन्द्रगुप्त गौड का राजा है और माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन दोनों मिलकर हर्ष की हत्या का षड्यंत्र रचते है लेकिन असफल रह जाते हैं। शशांक पहले हर्ष का माण्डलिक बन जाता है और बाद में विश्वासघात करके वर्ध्दन वंश का नाश करना चाहता है। साथ ही साथ वर्ध्दन वंश को और गुप्तवंशज को उच्च मानता है। ब्राहमण और बौध्द जाति का संघर्ष का चित्रण यहाँ पर दिखायी देता है।

'शशिगुप्त' नाटक में मौर्यवंश और तैमूर मुगल वंश का संघर्ष प्रमुख रूप से दिखायी देता है। अश्वक जाति के सरदार, पीछे से चन्द्रगुप्त नाम धारण कर भारत के सम्राट बने। शशिगुप्त और सिकन्दर में हमेशा संघर्ष रहता है। शशिगुप्त विदेशी मुगलों को अपने मुल्क से हटाकर एक साम्राज्य की स्थापना करना चाहता है। यहाँ पर अश्वक जाति और मुस्लिम जाति की समस्या भी दिखायी देती है।

'शेरशाह' नाटक में तैमूर वंश को भारत से मिटानेवाले अफगान सरदार शेरशाह के कृत्यों का चित्रण है। हिन्दू-मुस्लिम धर्मो की समस्या को एकता के सूत्र में पिरोया है। शेरशाह मुस्लिम राजा होते हुए भी मित्र ब्रह्मादित्य ब्राहमण और हिन्दुओं से ज्यादा प्रेम करता है। यहाँ पर वंश की समस्या हमें हर नाटक में प्रमुख रूप से दिखायी देती है।

4.3.1.2 यौन की समस्या -

यौन मानवीय जीवन की सहज प्रवृत्ति है। स्त्री और पुरूष में यह भावना कम अधिक मात्रा में होती है। जब इसका अतिरेक हो जाता है तब काम समस्या निर्माण होती है। वर्तमान समाज में यह समस्या दिन-ब-दिन बढ्ती जा रही है। पाश्चात्य विचारवंत फ्राईड ने यौन समस्या पर अपने विचार व्यक्त किये है। वास्तव में काम समस्या मानव की मुलभूत समस्या है। काम की मुलभूत प्रवृत्ति मानव में होने के कारण काम समस्या यह एक मानव जगत की बहुत ही भयानक समस्या बन गयी है।

'शेरशाह' नाटक में शेरशाह और निजाम ये दोन प्रमुख पुरूष पात्र हैं और लाडबानू स्त्री पात्र। शेरशाह आदर्श को अपनाता है और दूसरा निजाम यर्थाथ को। लाडबानू चुनार किले के सुबेदार ताजखॉ की बेगम और बाद में शेरशाह की बेगम बन जाती है। शेरशाह और निजाम दोनों भाई हैं। निजाम लाड की तसबीर बनाते बनाते ही उससे प्यार कर बैठता है। जब लाड बीमार पड जाती है तब निजाम लाड को मिलने के लिए शेरशाह के कमरे में जाता है। तब वह लाड का हाथ अपने हाथों में लेकर निजाम देवर होते हुए भी और लाड्बानू भाभी होते हुए भी निजाम लाड के प्यार में गिर जाता है। इस प्रकार निजाम और लाड पूर्ण रूप से यौन का शिकार बन जाते हैं।

यौन समस्या के कारण ही शशिगुप्त हेलन के प्रति पूर्ण रूप से आकर्षित हो जाती है। हेलन देशभक्त नारी और सच्चे प्रेमी के रूप में हमारे सामने आ जाती है। मोर देकर पर्वतक राजा हेलन को अपना शिकार बनाना चाहता है लेकिन हेलन इन्कार करती है। शशिगुप्त अपने प्यार का इजहार हेलन से करता है। इसलिए शशिगुप्त और हेलन एक हो जाते है और उनके मिलने से दो मुल्क एक हो जाते है।

इस प्रकार सेठ जी ने विवेच्य नाटकों के अंतर्गत शेरशाह, निजाम, शशिगुप्त , लाडबानू और हेलन इन पात्रों की यौन समस्या का यर्थाथ चित्रण प्रस्तुत करके उसका हल भी आदर्शवाद के रूप में प्रस्तुत किया है।

4.3.2.3 प्रेम की समस्या -

सेठ जी ने नारी के प्रत्येक पहलू का सूक्ष्म अवलोकन किया है। विवेच्य नाटकों में स्वच्छंद प्रेम के साथ नैतिक्ता की भी रक्षा की है। 'शशिगुप्त' नाटक में हेलन और शशिगुप्त का प्रेम स्वच्छंद है। वह सामाजिक मर्यादाओं की पूर्ण उपेक्षा कर स्वंय की अनुभूति को महत्व देती है। सिल्यूकस पिताजी और यूनान सम्राट सिकन्दर हेलन से शशिगुप्त के प्रति प्रेम करने से विरोध करते हैं। शशिगुप्त देशभक्त है इसका हेलन को जब पता चलता है तब वह पूर्ण रूप से शशिगुप्त के प्रति आकर्षित हो जाती है। पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति का प्रभाव हेलन पर दिखायी देता है। इन दोनों के प्रेम के कारण

यूनान सम्राट सिकन्दर, पंचनद देश का राजा पर्वतक और सेनापति सिल्यूकस में संघर्ष इस बात को लेकर होता है। तब हेलन अपने पिताजी से कहती है , ''आप मुझे सम्राट या संसार में किसी का भय दिखाकर मुझ से कोई काम नहीं करा सकते। मै जानती हूँ, वे क्रूरतम उपायों को भी मैं ठीक समझती हूँ। उससे वे मुझे विमुख नहीं कर सकते। वे मुझे मरवा सकते है, पर मुझे विवश कर मेरा विवाह प्रर्वतक अथवा अन्य किसी से नहीं कर सकते। वे मेरे शव को यूनान ले जा सकते हैं, पर मेरे जीते - जी मुझ से जबरदस्ती से आर्यावर्त नहीं छुडवा सकते।''[4]

दूसरे नाटक में निजाम भी लाडबानू से स्वच्छंद प्रेम करता है। निजाम देवर होते हुए भी लाडबानू उससे प्रेम करती है। वे दोनों शादी नहीं करते लेकिन प्रेम जरूर करते हैं। इस प्रेम के कारण आखिर लाड पागल हो जाती है। जलती हुई तसबीर को देखकर लाड कहती है , ''धीरे धीरे जल रही है। इसे भी जलाकर गये हो.... यह.... यह.... तस्वीर जो तुम्हारी और मेरी मुहब्बत की पहिली निशानी थी., पाक से पाक मुहब्बत की पाक ये पाक निशानी। पर... पर फिर यह तेजी से ही क्यों न जले?''[5] इस प्रकार सेठ जी ने यहाँ पर स्वच्छंदता को अधिक महत्व नहीं दिया है क्योंकि सामाजिक मर्यादाओं पर कोई आँच न आए। विवाह की सामाजिक व्यवस्था से प्रेम की शक्ति मिलती है। विवाह और प्रेम को एक दूसरे का पूरक न मानकर पाश्चात्य विचारधारा के प्रभाव सें अलग अलग स्थान दिया है।

4.3.1.3.1 विवाहोत्तर - प्रेम की समस्या -

'शेरशाह' नाटक में शेरशाह जब चुनार किले के सुबेदार ताजखाँ पर आक्रमण करता है और चुनार जीत लेता है। तब शेरशाह को पता चलता है कि ताजखाँ की बेगम लाडबानू मलिका के पास सोने चांदी के डेरे है, अपार दौलत है। तब शेरशाह सिर्फ दौलत के कारण उससे विवाह कर लेता है। शेरशाह की लाड बेगम होने के बाद पूर्वप्रेमी मुसव्विर निजाम उसे देवर के रूप में मिलता है। शादी के बाद दिनरात प्रजाहित की चिन्ता शेरशाह को रहती है। एक बार भी प्यार भरी निगाहों से शेरशाह उसकी की ओर नहीं देखता। इसी कारण लाड अपना प्यार पाने के लिए सदैव बेचैन रहती है।

4.3.1.3.2 विवाह-पूर्व प्रेम की समस्या -

शशिगुप्त और हेलन का प्रेम विवाहपूर्व होता है। शशिगुप्त आर्यावर्त का सबसे सुन्दर, शूर, पराक्रमी और देशप्रेमी राजा होने के कारण हेलन उससे प्रेम करती है। लेकिन जब पिता से हेलन को पता चलता है कि शशिगुप्त देशद्रोही है, वह सिकन्दर से मिला हुआ है तब हेलन क्रोधित होकर कहती है, "देशभक्त देशद्रोही से विवाह नहीं कर सकता। स्वर्ग और नरक का सम्बन्ध नहीं हो सकता। पूर्णिमा और अमावशा में प्रेम सम्भव नहीं। दिन और रात का सम्बन्ध कैसा? मैं देशभक्त, शशिगुप्त देशद्रोही। आकाश और पाताल कैसे मिल सकते है?" [6]

निजाम आगरे के उद्यान में पहली बार लाड को देखता हैं। लाड की तसबीर बनाते बनाते निजाम उससे प्रेम करने लगता है। लाड शादीशुदा औरत रहती है फिर भी निजाम से स्वच्छंद प्रेम करती है " मेरे दिल को चाहता था और मैंने..... मैं ने भी आँखों के रास्ते दिल उसकी नजर कर दिया। यह.... यह सब हो गया, नसीम, आगरे के उस बाग में, उन तीन ही दिनों के अन्दर जब मेरी तस्वीर बन रही थी तब।" [7] इस प्रकार सेठ जी के विवेच्य नाटकों में प्रेम की समस्या दिखायी देती है।

4.3.1.4 विधवा समस्या -

विवेच्य नाटकों में विधवा समस्या भी दिखायी देती है। हर्ष अपनी बहन राज्यश्री को विधवा होते हुए भी कान्यकुब्ज देश की सम्राज्ञी बनाता है। ' हर्ष ' नाटक में विधवा नारी की समस्या दिखायी है। वह हमें आज भी दिखायी देती है। उन्हें नष्ट करके अपने राज्य में नया परिवर्तन हर्ष लाना चाहते है। उस वक्त भी समाज में नारी को स्वतंत्रता का हक्क नहीं था। विधवा नारी होने के कारण कुछ ब्राहमण लोक हर्ष का विरोध करते हैं और हर्ष का शत्रू गौड का राजा शशांक नरेन्द्रगुप्त से मिल जाते है। शशांक नरेन्द्रगुप्त, आदित्यसेन और कुछ विरोधी ब्राहमण यज्ञ के वक्त हर्ष की हत्या का षडयंत्र रचते है। यह सब एक विधवा स्त्री को सम्राज्ञी बनाने से होता है।

गौड का राजा शशांक राज्यश्री के सम्राज्ञी बनाने को प्रखर विरोध करता है। वह क्रोधित होकर गुप्तचराधिपति से कहता है , ''यह वर्णाश्रम और स्त्री-पुरूषों के कर्तव्यों में विभेद मानने वाले आर्य धर्म पर उस बौध्द-धर्म का जिसमें न वर्ण है और न आश्रम, जिनमें न पुरूषों के कर्तव्य भिन्न हैं और न स्त्रियों के, प्रधान आक्रमण है। देखता हूँ, देखता शिलादित्य इस देश में पुन: बौध्द की स्थापना में सफल होता है या मैं आर्य-धर्म की रक्षा में।''[8] इस प्रकार विधवा स्त्री राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाने पर सभी ओर से उसका प्रखर विरोध होता है। लेकिन हर्ष दूरदृष्टिकोन वादी और आदर्शवादी होने के कारण इस घटना से वह स्त्री को मुक्त करना चाहता है। रूढी, प्रथा परंपरा को तिलांजलि देकर एक नयी परिपाटी चलाना चाहता है। जिसमें विधवा स्त्री को भी मंगलकार्य में प्रवेश मिल सके और एक विधवा भी सम्राज्ञी पद पर आसीन हो सके। पुरूषों से अच्छा राज्य कारोबार विधवा स्त्री भी संभालती है। इस प्रकार 'हर्ष ' नाटक में विधवा समस्याओं पर सेठ जी ने विचार विमर्श किया है।

4.3.1.5 एकता के अभाव की समस्या -

अकेला इन्सान कठिन काम नहीं कर सकता लेकिन इन्सान की एकता से हर कार्य किया जा सकता है। सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में प्रमुख पात्र के जरिए हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह नाटको में प्रमुख रूप से एकता की समस्या दिखायी देती है।

'हर्ष ' नाटक में गौड का राजा शशांक नरेन्द्रगुप्त, माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन और स्थाण्वीश्वर का राजा हर्ष वर्ध्दन इन दोनों में एकता नहीं थी। इसीकारण परस्पर मतभिन्नता बढती गयी और परिणामत: वे हर्ष के शत्रू बन गये। गुप्तवंशज होते हुए भी माधवगुप्त अपने मित्र हर्ष के प्रति आदरभाव व्यक्त करता है। वह अपने घर में महापुरूष के साथ हर्ष के प्रतिमा का पूजन भी करता है। लेकिन यह आदित्यसेन को अपने घर हर्ष के प्रतिमा को पूजन ठीक नहीं लगता। पुत्र और पिता में एकता न होने के कारण यह समस्या खडी हो जाती है।

भारतीय राजाओं में एकता न होने के कारण शक-हुण, मुगल और ब्रिटीशों ने अपना साम्राज्य भारत पर स्थापित किया। 'शशिगुप्त ' नाटक में भी तक्षशिला का राजा देशद्रोही आम्भीक, पंचनद देश का राजा, पर्वतक और मगध का राजा नन्द में आपसी एकता न होने के कारण यूनान का सम्राट सिकन्दर आकर भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित करता है। शशिगुप्त सर्वसामान्य अश्वक जाति का सरदार दृढप्रतिज्ञ , देशप्रेमी और एकता के बलबुतेपर सिकन्दर से पहले मेल कर लिया और बाद में समय का फायदा उठाते हुए शशिगुप्त ने सिकन्दर से युध्द किया।

शेरशाह हिन्दू - मुस्लिम में एकता प्रस्थापित करना चाहता है। यहाँ पर भी मुगल सम्राट हुमायूँ ने भी भारतीय राजाओं में एकता न होने के कारण अपना साम्राज्य स्थापित किया था। गुलामी में जीने की भारतवासीयों को आदत सी पड गयी है। " शेरखाँ साहब को देश से प्रेम है, इसीलिए हिन्दू, मुस्लमान दोनों से प्रेम है। वह मुसलमान इसलिए हैं कि मुसलमान के घर उनका जन्म हुआ है, लेकिन हिन्दूओं का भला करनेवाला उनसे अधिक कोई हिन्दू नहीं है।"[9] व्यक्ति-व्यक्ति में, समाज में, राष्ट्र में और देश में एकता स्थापित करना सेठ जी चाहते है।

4.3.2राजनीतिक समस्याएँ -

समाज, साहित्य और राजनीति का पारस्पारिक सबंध हैं। जिस भाषा का साहित्य अच्छा होगा उसका समाज भी अच्छा होगा। ये तीनों साथ-साथ चलनेवाली चीजे हैं। इन तीनों का एक ही उद्देश है। साहित्य इन तीनों की उत्पत्ति के लिए एक बीज का काम करता है। मनुष्य को जहॉ सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी जाती है, वही अरस्तू ने उसे राजनीतिक प्राणी भी बताया है। रोमशिला ने एक जगह लिखा है, - "जो कोई मानव - समाज के भविष्य के लिए युद्ध करना चाहता है उसे राजनीतिक क्षेत्र में युद्ध करना चाहिए क्योंकि मानसिक स्वाधीनता ही उसे युद्ध क्षेत्र पर हारी बजाए रखेगी।"[10] इस प्रकार स्वातंत्रपूर्व काल से लेकर आजतक राजनीतिक समस्या देश को खोखला बनाती जा रही है।

4.3.2.1 परकीय आक्रमण की समस्या -

भारत पर परकीय आक्रमण बार-बार होते रहे हैं। इसमें प्रथम हूणों ने हिन्दुस्तान को लुटा था। उसके बाद शकों ने, बाबर, तैमूर आदि मुस्लिम सत्ता ने तथा अंग्रेजों ने तो पूरे हिन्दुस्तान का नक्शा ही बदल डाला। चीन ने 1961 में भारत पर आक्रमण किया और पाकिस्तान ने भी दो बार आक्रमण किये। भारतीय जनता पर इन आक्रमण कारियों ने बडा अत्याचार किया है। इसका परिणाम सभी स्तरों पर हमें दिखायी देता है। नाटककार ने प्रस्तुत चित्रण में परकीय आक्रमणों के परिणाम बताये हैं।

हर्ष पर मुगलों का आक्रमण बार-बार होता रहा । 'हर्ष ' नाटक की मूल समस्या तो एकता स्थापित करना है। साथ ही साथ आपसी मतभेदों के कारण शशांक नरेन्द्रगुप्त हर्ष पर आक्रमण करता है। ब्राहमण और बौध्द धर्मो का प्रखर रूप से संघर्ष यहाँ पर दिखायी देता है।

यूनान का सम्राट सिकन्दर भारत के हर एक मुल्क पर आक्रमण करते करते आखिर वक्त मगध तक पहुँच जाता है। उस समय पंचनद और मगध यह दो राज्य ही भारत के बलाढय राजा माने जाते थे। पंचनद देश का राजा पर्वतक और यूनान सम्राट सिकन्दर दोनों में युध्द हो जाता है। पर्वतक यूनान सम्राट की शरणागती स्विकारता है।

लेकिन यूनान सम्राट सिकन्दर, देशद्रोही आम्भीक और पंचनद देश का राजा पर्वतक मगध का विलासपूर्ण राजा नन्द पर आक्रमण करते हैं। लेकिन चाणक्य की कूटनीति और शशिगुप्त की वीरता के कारण आखिर सिकन्दर को भारत से खाली हाथ लौटना पडता है। सिल्यूकस अपने सम्राट की इच्छा पूरी करने के लिए शशिगुप्त पर आक्रमण करता है। परंतु सिल्यूकस की प्रजा अन्त में अपने वस्त्र रखकर शरणागति स्विकारता है। इस प्रकार शशिगुप्त नाटक में परकीय आक्रमण बार-बार होते रहते हैं। चाणक्य सिल्यूकस से कहता है "भूमि नहीं, सम्राट, किन्तु कोई ऐसी वस्तु जिससे भारतीयों का यूनान पर आक्रमण कर सकना असंभव हो जाय सम्राट, दो बार यवनों ने भारत पर आक्रमण किया, भारतवासियों की भी यूनान पर आक्रमण करने की इच्छा हो सकती है।"[11] इस प्रकार सेठ जी ने शशिगुप्त नाटक में बाहरी आक्रमणों का वर्णन किया है।

'शेरशाह' नाटक में भी मुगल सम्राट हुमायूँ ने अनेक बार भारत पर आक्रमण करके अपना राज्यविस्तर किया है। भारतीय सांप्रदायिकता की उलझनों से उठकर शेरशाह ने भारतीयता का आदर्श स्थापित किया है। हिन्दु-मुसलमान दोनों मिलकर विदेशी मुगलों का आक्रमण करते हैं। मुगलों को देश का शत्रू मानते है। शेरशाह भी समय का फायदा उठाते हुए हुमायूँ से युध्द करना चाहता है। हुमायूँ पहली बार बंगाल पर आक्रमण करता है और सारा बंगाल जीत लेता है। बिहार शरीफ प्रान्त में दो गाँव शाहया और चौसा पर भी आक्रमण करता है और जीत लेता है। हुमायूँ को बाद में पता चलता है कि चुनार किले में दौलत ज्यादा है। इसलिए वह चुनार पर आक्रमण करके चुनार किले को भी लुट लेता है। मुगलों ने पठानों पर भी आक्रमण करके सारी सत्ता लूट ली है। इस प्रकार सेठ जी के विवेच्य नाटकों में आक्रमण की समस्या देखने को मिलती हैं।

4.3.2.2 देश विभाजन की समस्या -

मुगलों ने हमारे देश पर आक्रमन करके हर एक मुल्क को हम से छिन्न लिये है। शशिगुप्त, हर्ष और शेरशाह इन तीनों ऐतिहासिक नाटकों में सेठ जी ने हमारे मुल्क किस तरह विदेशी लोगों के पास गुलाम बनते गये इसका चित्रण किया है। देश में सत्याग्रह आंदोलन छेडा हुआ था उस में सेठ जी का प्रमुख स्थान था। सेठ गोविन्ददास उनके पिता दीवान बहादुर सेठ जीवनदास एवं प्रणिता राजा गोकुलदास - तीनों ही व्यक्ति भारतीय इतिहास के तीन विशिष्ट पिढीयों का प्रतिनिधित्व करते हैं। तीनों पिढीयों ने देश को विभाजन होने से बचाने की पूर्ण कोशिश की है अत: सेठ गोविन्ददास जी को भारत की आजादी के रूप में सफलता मिलती है।

माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन और गौड् का राजा शशांक नरेन्द्रगुप्त कुछ ब्राह्मणों के साथ हर्ष पर आक्रमण करके हर्ष का नाश करना चाहते है और देश विभाजित करके उस राज्य का शशांक राजा बनना चाहता है। लेकिन आदित्यसेन और शशांक नरेन्द्रगुप्त इस योजना में पूर्ण रूप से दोनों असफल रहते हैं। मौर्य के समय तो सारा भारत एक साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था, गुप्तों के समय भी सारा आर्यावर्त एक

साम्राज्य के अन्तर्गत रहा, फिर भी भारत में एक राष्ट्र का निर्माण न हुआ। क्योंकि युध्द करके बलपूर्वक लाये हुए भिन्न-भिन्न राज्यों का एक साम्राज्य के अन्तर्गत लाना असंभव है। वे राज्य हमेशा स्वाधीनता की माँग करते रहें। समय पाते ही वे हर्ष के प्रति शशांक की भाँति विद्रोह करते हैं और स्वतन्त्र हो जाते हैं।

तक्षशिला का राजा देशद्रोही आम्भीक चंद पैसों के लिए अपने वतन को बेच डालता है। उसी कारण यूनान सम्राट सिकन्दर ने भारत में आकर हमारे देश को विभाजित किया। हर मुल्क पर वह अपना कब्जा करता है। कुछ भारतीय मुसलामनों ने भी उसका साथ दिया। सिकन्दर पूर्ण रूप से अपने बलाढ्य सैनिकों के और कूटनीति से भारत देश का विभाजन करता रहा। शेरशाह में भी हुमायूँ ने मुगलों का साम्राज्य देश पर स्थापन करके वह नया राज्य प्रस्थापित किया और देश का विभाजन किया। लेकिन अंत में हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह यह तीनों के आदर्श क्रिया कलापों से एक साम्राज्य की स्थापना निर्माण हुई दिखायी देती है।

4.3.2.3 न्याय व्यवस्था की समस्या -

आधुनिक काल में जिस प्रकार न्याय व्यवस्था है उसी प्रकार प्राचीन काल में नहीं थी। न्याय देने का कार्य प्रमुख रूप से राजा ही करता था मगर उस न्याय को सुनाने के लिए उस पर विचारविनिमय किया जाता था। हर्ष, शशिगुप्त ओर शेरशाह तीनों नाटकों में न्याय देने का कार्य अप्रत्यक्ष रूप से राजाओं के मित्र ही करते हैं।

'हर्ष' नाटक में हर्ष का मित्र माधवगुप्त से पूरे समस्या का वर्णन, बहस, तर्क-वितर्क हो जाने के बाद कोई भी घटना-प्रसंग पर हर्ष न्याय देते थे। वर्तमान समाज में सामान्य व्यक्ति को न्याय मिलना मुश्किल हो रहा है। गुनाहगार गुनाह करके खुले आम घुम रहे हैं। रूपयों के जोर पर अदालत का फैसला बदल रहा है। लेकिन उस वक्त सत्य के बलबुते पर खडी हुई न्याय व्यवस्था हमें देखने को मिलती है। माधवगुप्त हर एक फैसला हर्ष से विचारविनिमय करके ही लेते हैं। जिस वक्त बन्दी बनाकर आदित्यसेन को भण्डि और माधवगुप्त हर्ष के पास सभा भवन में ले आते हैं तब ''नवयुवक तुम सच्चे

नवयुवक हो। युवावस्था में जैसा तेज, जैसा उत्साह, जैसी निर्भीकता होनी चाहिए, वैसी ही तुम में है। परन्तु देखो तुम्हारे ये सद्‌गुण तुम्हारे एक विवेकहीन विश्वास के कारण तुम्हे ठीक पथ पर न चलाकर पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं। तुमने यदि इन सद्‌गुणों का अपने और अपने वंश के उत्कर्ष में उपयोग न कर लोकसेवा में उपयोग किया तो तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम इस आर्यावर्त के परम प्रतापी, समय लोकसेवा सम्राट होंगे और आदित्यसेन को मुक्त करने का हर्ष फैसला सुनाता है।''[12]

शशिगुप्त के शासन में न्यायव्यवस्था का अधिक महत्व था। राज्यव्यवस्था सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए शशिगुप्त के शासन में न्यायव्यवस्था, जनसाधारण की खुशहाली की तथा चोरी आदि जुर्म के समय शशिगुप्त खुद सजा देने का कार्य करता था। विवेच्य नाटकों के प्रमुख पात्र भी आदर्श न्यायदान का कार्य करते थे।

4.3.2.4 सत्ता के दुरूपयोग की समस्या -

हर इन्सान सत्ता का, कुर्सी का लोभी होता है। सत्ता के लिए आज इन्सान इन्सानियत के साथ अपना वतन,जमीर बेच रहा है। इन्सान के हाथ में सत्ता आती है तब लोभी वृत्ती, अहंपूर्ण और कुप्रवृत्तियों की भावना बढती है। सेठ गोविन्ददास जी के विवेच्य नाटकों में हमें हर एक मुगल विदेशी यूनान सम्राट सिकन्दर, मुगल सम्राट हुमायूँ और गौंड का राजा शशांक नरेन्द्रगुप्त आदि सत्ता का दुरूपयोग करते हुए दिखाई देते है।

शशांक नरेन्द्रगुप्त हर्ष का विश्वासघात करना चाहता है। यशोधवलदेव उसे इससे रोकने की कोशिश करता है पर वह मानता नहीं। शशांक पहली बार हर्ष से मित्रता प्रस्थापित करता है। पूर्ण रूप से हर्ष को अपने विश्वास में लेता है और बाद में वह हर्ष राजा का वर्ध्दन वंश ही समाप्त करना चाहता है। गौड् का राजा होने के कारण आदित्यसेन को भी हर्ष के विरोध में प्रोत्साहित करता है। कुछ ब्राह्मणों के साथ मिलकर हर्ष की हत्या यज्ञ के दिन करना चाहते है। शशांक अपनी जाति दुश्मनी निकालने के लिए सत्ता का दुरूपयोग करता है।

आम्भीक तक्षशिला राजा होते हुए भी वह सिकन्दर से मिल जाता है। सिकन्दर अपनी सत्ता का पूर्ण रूप से उपयोग करके भारत की सारी जायदाद का मालिक बनना चाहता है। परन्तु चन्द्रगुप्त उसे अपना साहस और चाणक्य की बुध्दि से खाली हाथ अपने देश वापस लौटा देता है। साथ ही साथ शेरशाह भी हुमायूँ की सत्ता का दुरूपयोग करने से उसे गद्दी छोडनी पडती है और अपने देश जाना पडता है।

4.3.2.5 दलबदलू नेता या राजाओं की समस्या -

आधुनिक राजनैतिक नेताओं का वर्णन यहाँ पर किया जा सकता है। आज के नेता पूर्ण रूप से भ्रष्ट हो गये है। पैसों के लिए वह अपना सब कुछ दाँव पर लगा सकते है। स्वातंत्र्यपूर्वकालीन नेता और राजा भी दल बदलते थे। आज का नेता सुबह, दुपहर और शाम में कुछ ही पल भर में दल पक्ष बदलते हैं। इन्सानियत को अपने जमीर को, वतन को बेचकर आज का नेता सिर्फ स्वार्थ के लिए नेता बन रहा है और भारत देश को कमजोर बना रहा है। इसी प्रकार इसके पूर्व की स्थिति भी काफी भयंकर थी। भारत देश पूर्ण रूप से गुलमगिरी में जखडा था। सेठ जी के प्रत्येक नाटक का उद्देश्य राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करना, विश्वबंधुत्व की भावना को उजागर करना और भारत देश को स्वाधीन बनाना रहा है।

आदित्यसेन अपने जातिय वंश के संघर्ष के लिए अपने माता-शैलबाला और पिता माधवगुप्त से अलग होकर वह शशांक नरेन्द्रगुप्त से मिल जाता है। शशांक नरेन्द्रगुप्त भी आदित्यसेन का उपयोग बडी अच्छी तरह से कर लेता है। ''यह संसार बुध्दिमानों और बलवानों के लिए है। जिनमें बुध्दि है, जिन में बल हैं , वे दूसरों पर अत्याचार कर सकते है। उनका अत्याचार पक्षपात तथा स्वार्थपूर्ण होते हुए भी, संसार न्यायपूर्ण मानती है।''[13] इस तरह आदित्यसेन अपने पिताजी माधवगुप्त से वार्तालाप करता है।

यूनान सम्राट सिकन्दर से तक्षशिला का राजा आम्भीक फौरन मिल जाता है। देशद्रोही राजा आम्भीक को 'हर्ष' युध्द में मार डालता है। उसके हृदय को छिन्न भिन्न कर डालता है। कुछ ब्राह्मण भी राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाने के विरोध में अपना दल

बदलकर शशांक से मिल जाते है। स्वयं शेरशाह भी सहसराँ से जौनपूर से बिहार शरीफ और आगरा इस प्रकार दल बदलते बदलते एक दिन पुरे सल्तनत का ही बादशाह बना। इस प्रकार दलबदलू नेताओं की समस्या दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। इसे रोकना हमारा कार्य है।

4.3.2.6 शरणार्थी पुनवर्सन की समस्या -

इन्सान के हाथों से एक न एक गुनाह, कसूर हो ही जाता है। लेकिन उस गुनाह को सजा न देकर प्यार भरे वार्तालाप से हम सुलझाएगें तो कोई भी बात युध्द तक नहीं पहुँचती। विवेच्य नाटकों में जो शत्रू रहते है वह अंत में शरणागती स्वीकारते है।

हर्ष राजा अत्यंत दयालू, क्षमाशील, संवेदनशील है। हर्ष के शासन सम्बन्धी परिश्रम पूरे भारत राष्ट्र की शक्ति है। माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन अपने पिता और हर्ष का कट्टर विरोधी है। शशांक, आदित्यसेन और ब्राह्मण — हर्ष के विरोधी रहते है। हर्ष की शरणागती स्वीकृत शशांक करता है परंतु उसके मन में हर्ष की हत्या और वर्ध्दन वंश के नाश की भावना पनपती रहती है। यज्ञ के समय वे हर्ष की हत्या करना चाहते है लेकिन उस योजना में शशांक खुद मारा जाता है और आदित्यसेन और ब्राह्मण हर्ष की शरणार्थी स्वीकृत करते है।

शशिगुप्त अश्वक जाति का सरदार हाते हुए भी दृढविश्वासू, देशप्रेमी, निस्वार्थी, स्वाभीमानी के फलस्वरूप एक दिन पूरे भारत का सम्राट बन जाता है। युध्द हार ने के बाद पर्वतक पंचनद देश का राजा सिकन्दर यूनान सम्राट के शरण में आता है। लेकिन पर्वतक भी शकटार द्वारा शरणागती स्वीकृत करके सिकन्दर को मारकर गद्दी पर बैठना चाहता था। लेकिन चाणक्य के कहने पर विषकन्या ने पर्वतक की हत्या कर दी। मगध का विलासप्रिय राजा का वध भी चाणक्य के कहने पर होता है।

शेरशाह खुद हुमायूँ के यहाँ नौकर रहता है, उनका मित्र ब्रह्मादित्य समय समय पर मदत करके एक दिन हुमायूँ से शेरशाह युध्द करता है और हुमायूँ को निराश होकर अपने देश को लौटना पडता है लेकिन वे एक न एक दिन मौका पाकर उस राजा से युध्द करते ही है।

4.3.2.7 लोकतंत्र की समस्या

लोकतंत्र की समस्या दिन-ब-दिन बढती ही चली जा रही है। प्राचीन काल में भी प्रजा का अनन्य साधरण महत्व हमें दिखायी देता है। हर्ष अपने बहन को ढूँढकर ले आता है और सम्राज्ञी बनाता है। उस वक्त हर्ष अपने प्रजा को पूँछकर ही राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाने का निर्णय लेता है। फिर भी कुछ ब्राह्मणों ने इसका प्रखर विरोध किया। दो समुह में से एक ब्राह्मण कहता है ''सर्वदा शास्त्र-निषिध्द। नहीं तो महाराज दशरथ की मूल्य और राम के वनवास के पश्चात जब भरत ने अवध का राज्य ग्रहण न किया, तब राम की पादुकाएँ अवध के सिंहासन पर क्यों रखी जातीं, कौशल्य का अभिषेक न होता ? महाराज पाण्डू की मृत्यू के पश्चात अन्धे धृतराष्ट्र हस्तिनापुर के सिंहासन पर क्यों बैठते, कुन्ती का अभिषेक न होता ? भारत के इतिहास में विधवा स्त्री का राज्याभिषेक कभी नहीं हुआ।''[14]

शशिगुप्त अपना जीवन प्रजा की हित में न्योछावर कर दिया था। सभी राज्यों के लोग एकत्रित आकर एक साम्राज्य की स्थापना करे इतना ही ख्वाब शशिगुप्त का रहता है। वह पूरा भी हो जाता है। लोक या प्रजा से राजा के प्रति इतना प्रेम चाणक्य नहीं देखता। यहाँ पर आपसी राजा और प्रजा के हितसंबंध के बारे में चर्चा की है।

शेरशाह भी हिन्दु-मुस्लिम लोगों मे एकता स्थापन करके सर्वधर्मसमभाव, आदर्श राज्य और राज्यप्रणाली का निर्माण करना चाहता है। शेरशाह जौनपूर के लोगों में एकता की भावना स्थापना करता है। बाद में वह बिहार शरीफ आ गए वहाँ पर अनेक कष्ट उठाकर, हर जाति के समुदाय का बच्चा उन्हें जानता है। ''शाही फरमानों और सेनाओं से चाहे संपत्ति पर क्षणिक अधिकार प्राप्त हो जाये, पर बिना सच्ची सेवा के हृदय पर अधिकार नहीं हो सकता और बिना हृदय पर अधिकार हुए किसी वस्तु पर स्थायी अधिकार नहीं रह सकता।'' निष्कर्षत: विवेच्य नाटकों में प्रमुख पात्रों के जरिए से व्यक्ति-व्यक्ति में, समाज में , राष्ट्र में और समस्त लोकतंत्र में एकता स्थापित करना सेठ जी ने महत्वपूर्ण माना है।

4.3.2.8 उत्तराधिकारी की समस्या

हर क्षेत्र में, हर परिस्थिति में और हर समाज में उत्तराधिकारी की समस्या निर्माण होती है। पिता के बाद पुत्र की ओर सभी अधिकार आ जाते हैं। लेकिन पिता ने जिस प्रकार बडी होशियारी से अपना कारोभार चलाए वैसे ही पुत्र चलाए ऐसा नहीं कह सकते। इसलिए राजा जैसा बेटा नहीं होता ,पिता जैसा पुत्र नहीं होता, इसी कारण उत्ताराधिकारी की समस्या दिन ब दिन बढती चली जा रही है।

हर्ष का भाई राजवर्ध्दन का वध कुमार गुप्त करता है। राजवर्ध्दन मर जाने के बाद सिंहासन ग्रहण कौन करे ? कैसे करे ? ऐसे ढेर सारे सवाल हर्ष के मन में पैदा होते है। हर्ष को सिंहासन ग्रहण करने की इच्छा नहीं थी। ''लेकिन सभी के कहने पर और माधवगुप्त के इच्छानुसार स्थाण्वीश्वर राज्यसिंहासन शिलादित्य ग्रहण कर लेता है लेकिन वह प्रतिज्ञा करता है कि मैं विवाह नहीं करूगाँ और व्यर्थ का युध्द रक्तपात न करूँगा।''[15] राज्यसिंहासन ग्रहण करने के पश्चात सर्व प्रथम राज्यश्री को ढूँढ निकालता है। उसका स्वतंत्र राज्य रहता है लेकिन उसके पति का किसी ने वध किया है ? इसका हर्ष बदला लेना चाहता है। राज्यश्री को हर्ष मनाकर सम्राज्ञी बनाता है और पूरा कारोभार हर्ष ही संभालता है।

शशिगुप्त राजा होते हुए भी, शशिगुप्त के गुरू चाणक्य ने सभी अधिकार संभाले हैं। चाणक्य की बुध्दि और शशिगुप्त का पराक्रमी योध्दा दोनों के मिश्रण से ही अंत में एक साम्राज्य की स्थापना हो गयी है। हेलन और चंद्रगुप्त के विवाह से मौर्य साम्राज्य और यूनान साम्राज्य दोनों में मैत्री संबध प्रस्थापित हो जाते है।

शेरशाह राजा रहता है फिर भी राज्यकारोभार गौंड मित्र ब्रह्मादित्य ही संभालता है। हर एक नाटक में उत्तराधिकारी की समस्या हमे देखने को मिलती है।

4.3.3 आर्थिक समस्याएँ :-

'अर्थ ' ही जीवन का नियामक है। ''युग का राजनैतिक और सामाजिक घटनाक्रम तत्कालीन आर्थिक प्रतिक्रिया से प्रभावित रहता है और सामाजिक तथा राजनैतिक विकास

वर्गों के संघर्ष के आधार पर होते है। ''[16] सेठ जी के नाटकों में आर्थिक संघर्ष का चित्रण आ गया है। भारतीय समाज में इस आर्थिक कमी के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण हो गयी है।

सेठ जी के विवेच्य नाटकों में अर्थ की समस्या प्रखर रूप से दिखायी देती है। शशिगुप्त और शेरशाह दौलत न होने के कारण परकी य आक्रमणों का मुकाबला नहीं कर पाते। समय का फायदा उठाकर बाद में युद्ध करते है। शेरशाह ने तो मुल्क के लिए और सिर्फ दौलत के लिए लाड से विवाह किया है।

मनुष्य का जीवन सुचारू रूप से संचालित करने में 'अर्थ' महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अर्थव्यवस्था में अगर संतुलन न हो तो किसी भी राष्ट्र की प्रगति या उन्नति नहीं हो सकती। भारत कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था वाला देश है और ग्रामीण जीवन या ग्राम ही इस अर्थव्यवस्था की नींव है। अंग्रेजों की शोषण कूटनीति और व्यापार वृत्ति के कारण तथा बाद में औदयोगिक क्रांति के कारण भारत के देहातों मे कुटीर उद्योग तथा कृषी प्रधानता नष्ट होती गयी। इसी काल में जमींदारी और महाजन प्रथा रूढ थी। इन दोनों के शोषन से किसान वर्ग में जन्म लेना और कर्ज में ही मर जाना ,इस प्रकार की किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन दिखायी देता था। इसके साथ ही साथ प्रकृति के प्रकोप जैसे, भुकम्प, बाढ, अकाल और बीमारी आदि के कारण आर्थिक समस्या बढती गयी। अर्थ के कारण समाज में गरीबी की समस्या, ऋण की समस्या, मजदुरी की समस्या, जमींदारों की समस्या ,निरक्षरता, देशद्रोहियों की समस्या और गुलामगिरी की जटिल समस्या इसका चित्रण सेठ जी ने अपने नाटकों में किया है।

4.3.3.1 जमींदारो, महाजनों के द्वारा शोषण की समस्या -

प्राचीन काल से जमींदारो और महाजनों के द्वारा कृषक वर्ग और सर्व सामान्य गरीब जनता का शोषण हो रहा है। आज भी सफेद नकाब में छिपे हुए काले मन के हमारे नेता गरिबों का रक्त चुसकर, बदुआएँ लेकर अमीर बन रहे है, हमारे देश को खोखला बना रहे है। सेठ जी ने ऐतिहासिक नाटकों में भी कल्पना और इतिहास का सही रूप से मिश्रण करके हमारे सामने एक आदर्श व्यक्ति का जीता जागता चित्रण किया है।

हर्ष राजा होते हुए भी सर्वसामान्य प्रजाहित को अधिक महत्व दिया। लेकिन उनके ही राज्य में शशांक नरेन्द्रगुप्त जैसे क्रूर राजा भी होते है। ब्राहमण धर्म का वर्चस्व प्रस्थापित करने के लिए वह एक बौध्द भिक्षूक को मार डालते है और बौधिवृक्ष का जैसा एक एक भाग तोड्ते है उसी तरह उस बौध्द-भिक्षूक का कोई कसूर न रहते हुए भी उस पर आदित्यसेन और शशांक नरेन्द्रगुप्त भेंडीयों जैसा टूट पडते है। मोखरि वंश और गुप्तवंश की परम्परागत शत्रूता है तथा मौखरि और वर्ध्दन वंश का निकट का सम्बन्ध है।

शशिगुप्त सर्वसामान्य अश्वक जाति का सरदार था , बाद में भारत सम्राट बना। तक्षशिला का राजा आम्भीक देशद्रोही है। वह सिकन्दर विश्वविजेता यूनान सम्राट को बुलाकर उसका स्वागत करता है। आम्भीक के राज्य में जमींदारों और अमीर लोगों ने कृषक लोगों का, गरिबों का शोषण करके सिकन्दर से मिले है। अपने वतन से बेईमानी करके सिकन्दर से मिले है। मगध देश में नन्द और पंचनद-नरेश पर्वतक इस समय दो ही शक्तिशाली नरपति है। नन्द के राज्य में प्रजा राजा पर क्रोधित रहती है। जमींदारोंलोग और नन्द राजा गरीब जनता का शोषण करते है लेकिन उन जमिंदारों को नन्द राजा कभी कुछ नहीं कहता।

'शेरशाह' नाटक में कृषक वर्ग का प्रमुख रूप से शोषण दिखायी देता है। सहसराँ छोडकर शेरशाह को दर-दर भटकना पडा। इसी प्रकार सेठ जी ने शोषण की समस्या का चित्रण बडे प्रभावशाली ढंग से किया है।

4.3.3.2 गुलामगिरी की जटिल समस्या -

गुलामगिरी का मतलब स्वातंत्र्य पूर्वकालीन लोगों ने ही सही ढंग से महसूस किया है। आधुनिक युग में भी हम पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं है। किसी न किसी व्यक्ति के हम अधीन रहते ही है। 'अर्थ' के कमी के कारण जमीनदारों, सावकारों तथा अंग्रेजो के हम गुलाम बन गए। डेढ सौ साल हम अंग्रेजों के गुलाम थे क्योंकि हमारे पास युध्द करने के लिए दौलत नहीं थी। इसी कारण हम उनकी हर एक मुसीबत सहते रहे। लेकिन

15 अगस्त, 1947 की रात को एक सुखद सन्देह का एहसास हमें हो गया और हम आजाद हो गये। हर्ष के राज्य में धन न होने के कारण प्रारंभ में हूण और देवगुप्त युध्द नहीं कर सके।

शशिगुप्त तक्षशिला के राजभवन में सिकन्दर से शरणागती स्विकारता है लेकिन योग्य समय की वह राह देख रहा है। आर्थिक परिस्थिति कमकुवत होने के कारण ही शशिगुप्त शरणागती स्वीकृत करके सिकन्दर का वह गुलाम बन जाता है।

शेरशाह जौनपूर, बिहार शरीफ और आगरा चला जाता है। वह सहसराँ का जागीर छोडकर आर्थिक परिस्थिति में परिर्वतन करने के लिए पंडित, सुलेमान और अहमद की और पठानों की गुलामी शेरशाह को करनी पडती है। अंत में शेरशाह अपने मकसद में सफल होता है। ''यह शादी मुल्क की भलाई के लिए मैं जरूरी समझता हूँ। लाड मलिका की दौलत मुगलों को निकालने में बहुत मद्दगार होगी।''[17] निष्कर्षत: विदेशी लोगों की गुलामगिरी से त्रस्त आकर हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह ने वैयक्तिक स्वार्थ को त्यागकर प्राणों की बाजी लगाकर इस देश से गुलामों की जटील समस्या को नष्ट कर देने का प्रयास किया है।

4.3.3.3 ऋण की समस्या -

ऋण की समस्या दिन-ब-दिन बढती ही जा रही है। आज का मनुष्य किसी न किसी के प्रति ऋणी रहता है। उसी के तौर पर हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह के प्रति प्रजा किस प्रकार उनको आदर्श कार्यों का गुणगान गाती है यह बताया है। ऋण शब्द दो अर्थो में प्रयुक्त किया जाता है - पैसों के ब्याज के रूप में तथा महान आदर्श व्यक्ति के प्रति। यहाँ पर सेठ जी ने आदर्श पुरूषों के प्रति ऋण की समस्या दिखायी है।

'हर्ष' नाटक में स्वयं हर्ष राजत्याग कर विधवा राज्यश्री बहन को सम्राज्ञी बनाता है। यहाँ पर राज्यश्री हर्ष के प्रति हमेशा कृतज्ञता व्यक्त करती है। ''भाई यह क्या छोटा त्याग है ? एक एक कौडी के लिए सहोदय भ्राता एक दूसरे का सिर काटने को उद्यत रहते हैं और तुम इतने बडे साम्राज्य को ठोकर मार रहे हो।''[18] इस प्रकार हर्ष नाटक में राज्यश्री अपने भाई के प्रति हमेशा ऋणी रहती है।

'शशिगुप्त' नाटक में चाणक्य को चन्द्रगुप्त गुरू मानकर वह हमेशा ऋणी रहते है। दूरदर्शिता, दृढनिश्चयी और योग्य पथ-प्रदर्शन करने का कार्य चाणक्य करता है। समय का योग्य उपयोग और कूटनीति इसका अवलंब किस तरह करे यह सभी बाते चाणक्य शशिगुप्त को बता देता है। चाणक्य कहता है, "वत्स, इस समय आर्यावर्त में तुम से अधिक वीर, तुमसे अधिक साहसी, तुमसे अधिक आदर्शवादी, तुमसे अधिक देशभक्त, तुमसे अधिक शुध्द अत:करण और आचरणवाला और कोई व्यक्ति नहीं।"[19] इस तरह चाणक्य हर वक्त शशिगुप्त को प्रोत्साहित करता रहता है। शशिगुप्त के हाथों से सिल्यूकस को प्राणदान मिलता है और वीरभद्र गायक शशिगुप्त राजा का एक सच्चा गायक साधु के रूप में ऋणी हमेशा रहता है।

ब्रहमादित्य का हमेशा ऋणी शेरशाह रहा है। हिन्दु-मुस्लिम में एकता प्रस्थापित करने का और राष्ट्रीय भावना को उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य शेरशाह ने किया है। निष्कर्षत: ऋण की समस्या से इन्सान सुधर भी सकता है और बिघड भी सकता है। इस प्रकार विवेच्य नाटको में सेठ जी ने ऋण की समस्या का निराकरण करने का प्रयास किया है।

4.3.3.4 प्राकृतिक आपतियाँ - तथा देशद्रोही की समस्या

भूकम्प, बाढ और दुष्काल यह प्राकृतिक आपत्तियाँ मानी जाती है। 'हर्ष ' नाटक में राज्यश्री के खोज के वक्त अनेक दिक्कते आयी है। बडे - बडे वन, रेखा-तट, नर्मदा नदी की बहता हुआ बाढ का पानी और मार्गहिन जंगल इस पर मात करके विन्धाधिराज और हर्ष अपने बहन को ढुंढने में काबील हो जाते है। तप्त मरूभूमि, शीतल सागर, आसमान और भूंकप की ज्वालाक्षेत्र, वन प्राकृतिक आपत्तियॉ यहाँ पर दिखायी है।

'शशिगुप्त' नाटक में मकरान का मरूस्थल इस प्राकृतिक आपत्ति से हजारों सैनिक इस रेगिस्तान के शिकार हो जाते है। सबके मुख अत्यन्त सूखे हुए है, उन पर उद्विग्नता और ग्लानता का पूर्ण साम्राज्य दिखायी देता है। यवन सैनिंकों का युध्द भूमि पर का वर्णन यहॉ पर दिखायी देता है। " भूख और प्यास से रेत और सुर्य से जिस प्रकार तडप-

तडपकर यहाँ पर मर रहे उसकी अपेक्षा तो लड भिडकर वीरों के सदृश मरना कहीं अच्छा था।''[20] इस मरूस्थल में ही शशिगुप्त और चाणक्य हमारा पीछा करनेवाले है ऐसा सैनिकों में वार्तालाप होता है। प्राणदायी के रूप में वहाँ पर हेलन का पानी लेकर प्रवेश होता है और सभी सैनिक पानी पिने के लिए मर पडते है।

'शेरशाह' नाटक में भी महल को आग लग जाना यह प्राकृतिक आपत्ति कही जाती है लेकिन लाड उससे बच जाती है। देशद्रोही की समस्या भी विवेच्य नाटकों में देखने को मिलती है। 'हर्ष' नाटक में हर्ष के प्रति गौड का राजा शशांक नरेंद्रगुप्त, आदित्यसेन और स्थाण्वीश्वर के क्रूर ब्राह्मण हर्ष के हत्या का षडयंत्र रचते है और देशद्रोही की समस्या निर्माण होती है।

'शशिगुप्त ' नाटक में तक्षशिला का राजा सिकन्दर से मिलकर भारत देश की पूरी जानकारी देता है। आम्भीक को देशद्रोही ठहराया गया है वह बहुत नीच हरकत करता है। चंद पैसों के लिए वह अपना इमान, वतन बेचता है। शेरशाह नाटक में कुछ मुस्लिम लोग हुमायूँ का साथ देते है। कुछ मुस्लिम भारतीय होते हुए भी मुगलों का साथ देते है तब वह देशद्रोही कहलाते है। निष्कर्षत: प्राकृतिक आपत्ति और देशद्रोहीयों की समस्या आजकल बढती ही जा रही है। इस समस्या के कारण देश की उन्नती नहीं हो सकी।

4.3.4 सांस्कृतिक समस्याएँ -

'संस्कृति' अत्यंत व्यापक संज्ञा है। प्राचीन काल से मनुष्य अपनी सफलता के लिए संघर्ष करता आ रहा है। संस्कृति एक निरंतर प्रवाहित रहनेवाली प्रक्रिया है। वह सर्वत्र एक जैसी नहीं होती। संस्कृति की व्यापकता के बारे में डॉ. कृष्णा अवस्थी जी ने लिखा है, ''संस्कृति मनुष्य को मानवता की ओर प्रेरित करनेवाल आदर्शों, समाज, विचारों, कार्य अनुष्ठानों की समीष्ट का नाम है।''[21] संस्कृति समाज का विशिष्ट जीवन-ढंग है। सामान्यत: संस्कृति मनुष्य के सीखे हुए व्यवहारों का समग्र रूप है। संस्कृति का मोह प्रत्येक समाज में पाया जाता है और भारतीय समाज भी इसके लिए अपवाद नहीं है। इस सांस्कृतिक समस्या के अंतर्गत अनेक प्रकार की समस्यायें आती है -

4.3.4.1. विश्व - बन्धुत्व भावना की समस्या -

सेठ गोविन्ददास के ऐतिहासिक नाटकों से हमें पता चलता है कि राष्ट्रीय एकात्मता, विश्वबंन्धुत्व की भावना और सर्वधर्मसमभाव का प्रसार सेठ गोविन्द दास जी ने किया है। हर्ष राजा ने अपनी विधवा बहन राजश्री को सम्राज्ञी बनाकर नारी को उच्च स्थान प्रधान कर देता है। नारी के प्रति नया दृष्टिकोन प्रस्थापित करने का प्रयास हर्ष ने किया है। नारी मुक्ती का वह समर्थक है। प्राचीन काल से चलती आयी हुई रूढीया, प्रथा, परंपरा वह तोडना चाहता है। 'हर्ष' नाटक में गुप्तवंशज शशांक नरेन्द्रगुप्त और माधवगुप्त में बंन्धुत्व भावना की समस्या निर्माण हो जाती है। आदित्यसेन ओर माधवगुप्त में वैचारिक भिन्नता के कारण पिता-पुत्र की भावना एक समस्या बन जाती है। "मेरे ज्येष्ठ भ्राता मालवेश देवगुप्त का महाराजाधिराज राज्यवर्ध्दन के वध करने और उन्ही के कारण बन्धु कुमारगुप्त का वध होने पर भी मैं आपका सहवास न छोड सका। शशांक का बन्धुत्व इस स्नेहरूपी हिमालय के सम्मुख रजकण के तुल्य भी नहीं है, राजपुत्र।"[22] यहाँ पर बन्धुत्व की भावना एक समस्या बन जाती है। अच्छे आदर्शो के राह पर चलने के लिए बाधा आ जाती है। फिर भी इस भावना की ओर माधवगुप्त विचार न करते हुए अपने वंशज को, बन्धु नरेन्द्रगुप्त को और अपने लाडले एकलौती संतान आदित्यसेन को माधवगुप्त छोड देते है। परमभट्टारक के आदर्श और उनके निस्वार्थ देशप्रेम को अपना जीवन अर्पित माधवगुप्त करते है। निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है की बुरे कार्यो का नतीजा आखिर बुरा ही होता है और अच्छे कार्यों का नतीजा आखिर अच्छा ही होता है।

4.3.4.2 नैतिक मूल्यों के विघटन की समस्या -

आजकल हमारे नैतिक मूल्यों का दिन-ब-दिन विघटन होता हुआ दिखायी देता है। आधुनिक युग में मानव ने आसमान को छुआ,संगणक युग का निर्माण किया फिर भी अपने नैतिक मूल्यों का ऱ्हास वह रोक नहीं सका। 'हर्ष' नाटक में सेठ जी ने आदित्यसेन और शशांकगुप्त इन दो पात्रों के जरिए से हमें नैतिक मूल्यों से किस प्रकार दूर जाता है

यह सेठ जी ने बताया है। "क्षत्राणी होकर भिक्षा। जो प्राण एकदिन जाने ही है, उसकी भिक्षा। शत्रु से भिक्षा। उत्तम होता, यदि मैं तेरे गर्भ में ही प्रवेश न करता। उत्तम होता, यदि मैं जन्मते ही मर जाता।"[23] इस प्रकार हर्ष के सभाभवन में आदित्यसेन क्रोधित होकर अपने माता-पिता को धिक्कारता है।

'शशिगुप्त' नाटक में भी हमें नैतिक मूल्यों की विघटन की समस्या देखने को मिलती है। शशिगुप्त और हेलन का प्रेम संबंध होने के कारण पहली बार सिल्यूकस को शशिगुप्त छोड देता है। तब चाणक्य शशिगुप्त से कहता है, "तुम्हे इस प्रेम की देश की स्वतंत्रता के यज्ञ में आहुति देनी होगी। इस यज्ञ में दीक्षित, इस महान अनुष्ठान का संकल्प लेने के पश्चात तुम यवन को प्रेम की दृष्टि से देख ही नहीं सकते। प्रत्येक यवन तुम्हारे लिए घृणा की वस्तु है। जितनी तुम अलक्षेन्द्र से घृणा करते हो उतनी ही हरेक यवन से हेलन से भी, उसे तो विषकन्या मानो।"[24] इस प्रकार प्रेम यह नैतिक मूल्य माना जाता है लेकिन वह समस्या बन गयी है।

'शेरशाह ' नाटक में भी लाड और निजाम की पाक-मुहब्बत और दूसरी तरफ शेरशाह की प्रजा के प्रति प्रेम। इन दोनों में आखिर शेरशाह की जीत होती है। इस प्रकार यहाँ पर नैतिक मूल्यों की विघटन की समस्या किस प्रकार राजा के उन्नति के लिए बाधा ठरहती है इसका वर्णन विवेच्य नाटकों में किया है।

4.3.4.3. संस्कार हिन वृत्ति-लोगों की समस्या -

आधुनिक युग में बहुत कम लोग सुसंस्कृत मिल जाते है। चारों ओर संस्कारहिन वृत्ति के लोग समाज में दिखायी देते है। सेठ जी ने अपने ऐतिहासिक विवेच्य नाटकों में संस्कार हिन लोगों की समस्या पर विचार - विनिमय किया है। 'हर्ष' नाटक में शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन दोनों भी इस वृत्ति के काबील है। साथ ही साथ आर्यवर्त स्थाण्वीश्वर के कुछ ब्राहमण भी एक छोटीसी बात के लिए हर्ष की हत्या का षड्यंत्र रचते है। इन लोंगों का एक ही कार्य रहता है किसी भी प्रकार से, मार्ग से यह लोग बुरा सोचते है। हर्ष अपने शत्रु को भी बिना सजा से आदर्श सुझावों से मुक्त कर देता है। इसी कारण

हर्ष के मण्डप को किसी ने आग लगा दी है। तब हर्ष माधवगुप्त से कहता है यह क्या कुचक्र है ? तब माधवगुप्त कहता है, "परन्तु चिन्ता नहीं, इसके बुझाने का अभी प्रबन्ध करता हूँ। इस अग्नि के संग ही आर्यवर्त साम्राज्य के प्रति विद्रोहियों की अग्नि भी सदा के लिए शान्त हो जायेगी।"[25] हर्ष अपने प्रजाहित के लिए दिन रात परिश्रम करके , यज्ञ के वक्त शरीर पर के सारे आभूषण दान करनेवाला निस्वार्थ और देशप्रेमी व्यक्ति के साथ ऐसा सलूक संस्कारहिन वृत्ति के लोग ही करते है।

'शशिगुप्त' नाटक में भी तक्षशिला का राजा आम्भीक अपने वैयक्तिक स्वार्थ के लिए सिकन्दर से मिल जाता है। 'शेरशाह' नाटक में हुमायूँ के रूप में संस्कार हिन वृत्ति लोगों की समस्या दिखायी देती है। निष्कर्षत : विवेच्य नाटको में राष्ट्रीय एकात्मता निर्माण होने में बाधाएँ निर्माण हो गयी है।

4.3.4.4 पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण की समस्या -

आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति का ऱ्हास हो रहा है। हर क्षेत्र में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे पर पड रहा है। साथ ही साथ सेठ जी पर भी पाश्यात्य नाटककार इब्सन और बनार्ड शाँ का ज्यादा तर प्रभाव दिखायी दे रहा है। सेठ जी के विवेच्य नाटकों में ज्यादातर शेरशाह में निजाम और लाड का प्रेमप्रसंग बडा ही रोमांटिक दिखाने का प्रयास सेठ जी ने किया हे। पाश्चात्य अनुकरण का विवाहपूर्व प्रेम की समस्या किस प्रकार भाई-भाई के प्रेम में उलझन बन जाती है इसका चित्रण दिखायी देता है। निजाम आगरे के एक उद्यान में लाड की तसवीर बनाते हुए उससे प्यार कर बैठता है। वह चुनार के सुबेदार ताजखाँ की बेगम है फिर मुसव्विर निजाम-लाड दोनों बेहद प्यार करते है। बाद में शेरशाह चुनार किले पर चढाई करता है और युध्द जीत कर लाड से विवाह करता है। इस विवाह के पीछे एक उददेश्य रहता है। सबसे अहम बात यह कि लाड दौलतमंद अमीर खानदानी बेगम है और दुसरी बात वह खुबसूरत है। शेरशाह सिर्फ पैसौं के लिए शादी करता है। उस दौलत से सिर्फ मुल्क की भलाई और प्रजा हित करना चाहता है। विदेशी को यहाँ से बहार निकालकर परतंत्र से मुक्त करना चाहता है। देश को स्वाधीन

बनाकर सर्वधर्मसम भावना की स्थापना शेरशाह करना चाहता है। "निजाम, तुम मुझे भाभी कहकर ही बुलाते हो, पर जानते हो, जब तुम भाभी कहते हो, मुझे ऐसा मालुम होता है कि तुम मुझे बानू ही कह रहे हो... बानू... बानू - बदनसीब बानू।" इस प्रकार अपने भाभी के प्रति प्रेम करना यह पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण की समस्या मानी है।

शशिगुप्त और हेलन का प्रेम भी विवाहपूर्व ही है। इस पर भी पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखायी देता है। सिल्यूकस कहता है "हेलन तुम विवाह योग्य हो गयी हो ? अपने लिए कोई सुयोग्य वर पसन्द करो? शशिगुप्त, शशि जैसा नहीं है ? कहिए, मेरी परख, कैसी है ।"[26] निष्कर्षत: भारतीय संस्कृति का पूर्णत: ऱ्हास करने का कार्य पाश्चात्य संस्कृति ने किया है। यह एक महाभयानक समस्या निर्माण हो गयी है और इसके परिणाम स्वरूप आज की युवा पीढी खोकला बन गयी है। इसका सजीवता से चित्रण अपने विवेच्य नाटकों में किया है।

4.3.5 धार्मिक समस्याएँ -

'धारयति इति धर्मा:,' अर्थात जो धारण किया जाता है वह 'धर्म ' है। प्राचीन काल में धर्म की यह परिभाषा की गयी थी। आगे चलकर धर्म को परिभाषित करने का प्रयास कई आलोचकों ने किया है। धर्म के बारे में राधाकृष्णन ने कहा है, "जब तक मनुष्य पर धर्म का प्रभाव रहा, समाज में अशिक्षा और अंधविश्वासों के रहते हुए भी, आज की अपेक्षा अधिक शांति और सद्भावना थी। समाज में अशांति की वृद्धि होती गयी।"[27] याने धर्म को अधिक महत्व मिलने के कारण समाज में अनेक समस्याएँ निर्माण हो रही है।

वैसे देखा जाए तो "भारत के गाँव अपने पारस्पारिक आदर्शो एवं धार्मिक मूल्यों के गौरवपूर्ण स्थल रहे हैं अपनी पराधीनता के काल में यहाँ के ग्रामीण समाज में भी विभिन्न विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी थी। सती-प्रथा, परदा-प्रथा, बालविवाह, दहेजप्रथा, अनमेल विवाह आदि ऐसी रूढी मान्यताएँ बन गयी थी। जिनकी जकड में भारतीय नारी बुरी तरह फँस गयी थी। नारी के आन्तरिक संताप एवं संत्रास को तात्कालिक समाजसुधारकों ने बडी गंभीर दृष्टि से लिया और उसके टूटते स्वरूप को बचाने का यत्न किया।"[28] सेठ

गोविन्ददास जी के विवेच्य नाटकों में इन धार्मिक समस्या का चित्रण बडी मार्मिक रूप से दिखायी देता हैं।

4.3.5.1 धर्म के क्षेत्र में अनैतिकता एवं कर्मकांड -

सेठ जी के विवेच्य ऐतिहासिक नाटकों में धर्म के नाम पर युध्द हो गये है। 'हर्ष ' नाटक में ब्राहमण और बौध्द धर्म महत्वपूर्ण माने गए है। बौध्द के अनुयायी और प्रसारक हर्ष और उसकी विधवा बहन राज्यश्री हैं। गुप्त वंशज ब्राहमण धर्म को अधिक महत्व देते है। बोधिवृक्ष को शशांक काटना चाहता है। बोधिवृक्ष के नीचे एक बौध्द भिक्षूक बैठा था। उसे शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन दोनों उसे मारते हैं। इस वृक्ष ने उन्हें पाला है, बडा किया है ऐसा शशांक कहते है। आज की समस्या इतनी बडी होकर हमारे सामने खडी हो गयी है। ''अब हम तीनों काशीवासकर भगवती भागीरथी के तट पर ही शरीर छोडना चाहते हैं, नहीं तो हमारा परलोक भी बिगडेगा। शशांक ब्राह्मणों से कहता है जिस धर्म की सेवा आप चाहते है वह मै भी।''[29]

शशिगुप्त में भी मौर्य-साम्राज्य और यूनान साम्राज्य दो अलग-अलग धर्म रहते है। लेकिन सिकन्दर के मृत्यू के पश्चात सिल्यूकस शरणागति स्विकारता है और हेलन का हाथ सदा के लिए शशिगुप्त के हाथ में देता है। शेरशाह मुसलमान राजा होते हुए भी हिन्दूओं से अपार प्रेम रखते है। ब्रह्मादित्य शेरखाँ का परम मित्र है लेकिन प्रजा को इसकी शंका हमेशा रहती है। इसलिए अभी तक धर्म के क्षेत्र में अनैतिकता और कर्मकांड की समस्या बढती ही जा रही है।

4.3.5.2 जाति-पाँति तथा उच्च-निच्चता की समस्या -

प्राचीन काल से जाति-पाँति तथा उच्च-निच्चता की समस्या हर एक क्षेत्र में देखने को मिलती है। इस समस्या ने इन्सान का जीना हराम किया है। जाति-पाँति होने के कारण हमारे देश की उन्नती नहीं हो रही है। बौध्द के अनुयायी हर्ष, राज्यश्री और ब्राह्मण जाति का नेतृत्व शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन करते है। लेकिन शशांक नरेन्द्रगुप्त अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहता है। राजा होते हुए भी वो घिनौनी

हरकत करता रहता है। वह अहं, संकुचित मनोवृत्तीवाला, विश्वासघाती और हर्षवर्ध्दन वंश का शत्रू रहता है। गुप्तवंशज ब्राह्मण होने के कारण ब्राह्मण जाति को ही शशांक सर्वश्रेष्ठ मानता है और बौध्द जाति को वह हमेशा तिरस्कार की नजरों से देखता है। बौध्द भिक्षूकों पर वह अन्याय करता है, उन्हें मारता भी है। साथ ही साथ बोधिवृक्ष को भी काट डालता है।

शशिगुप्त मौर्य साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करता है और सिकन्दर यूनान साम्राज्य का नेता रहता है। हमारे ही भारत में चंद देशद्रोही आम्भीक जैसे राजा ने उसे आश्रय देकर उसके साम्राज्य को बढाने की कोशिश की है। शशिगुप्त ब्राह्मण होने के कारण सिकन्दर के प्रति वह हमेशा घृणास्पद नजरों से देखता है। तक्षशिला का राजा देशद्रोही आम्भीक, पंचनद देश का राजा पर्वतक और मगध का राजा नन्द इन भारतीय राजाओं में आपसी वैचारिक मतभेद होने के कारण यूनान सम्राट इसका मुनाफा उठाता है।

'शेरशाह' भारतीय मुस्लिम सच्चा हिन्दुस्तानी आदर्श राजा है और हुमायूँ विदेशी क्रूर मुस्लिम है। दोनों मुस्लिम है परंतु हिन्दूओं का समर्थन, दिल की आवाज सुननेवाला मुस्लिम शेरशाह है। ''हिन्दू-मुसलमान दोनों से प्रेम है। वह मुसलमान इसलिए है कि मुसलमान के घर उनका जन्म हुआ है, लेकिन हिन्दूओं का भला करनेवाला उनसे अधिक कोई हिन्दू नहीं है।''[30] निष्कर्षत: हमे जाति-पाँति, उच्चनिच्चता हर एक समस्या को मिटाकर देश की उन्नति करना महत्वपूर्ण है जैसे कि हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह नाटक में वर्णित है।

4.3.5.3 रीति-रिवाजों की समस्या -

हमारे भारत में अनेक रूढि, प्रथा, परंपरा, रीति-रिवाज और अनेक धर्म जाति के लोग मिलकर रहते है। प्राचीन काल में सती प्रथा, बालविवाह और विधवा प्रथा थी। लेकिन सेठ जी ने विवेच्य नाटकों में सारे बंधनो को तोडकर नारी को इन जटिल समस्या से मुक्त करने के लिए 'नारी समानता' का नया दृष्टिकोन प्रस्थापित किया है। 'हर्ष' नाटक में भी अनेक युगों से चलती आ रही प्रथा को हर्ष राजा ने उस समस्या को

तोड देता है और अपनी विधवा बहन राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाता है। इसका परिणाम हर्ष को अंत तक सहना पडता है। कुछ ब्राह्मण, स्थाण्वीश्वर इसके कट्टर विरोधक रहते है। वह शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन को जाकर मिल जाते है।

रीति-रिवाजों से त्रस्त होकर हर्ष राजा संतान प्रेम से वंचित रहता है। इसी कारण वंश को बढाने के लिए जयमाला को अपनी पुत्री मान लेता है। भाई-बहन का अपार प्रेम या संबधों का यहाँ पर वर्णन दिखायी देता है। रीति-रिवाजों के कारण अनेक समस्याओं का निर्माण 'हर्ष' नाटक में हुआ है।

शशिगुप्त में गुरू-शिष्य संबंधों का बडी मार्मिक ढंग से वर्णन किया है।चाणक्य की कूटनीति, बुध्दिमत्ता, दूरदृष्टि और वाक्यचातुर्य और शशिगुप्त की वीरता, पराक्रमी योध्दा और आदर्श रूप का चित्रण यहाँ पर मिलता है। अंत में चाणक्य संन्यास ग्रहण कर लेता है और शिष्य-सिंहासन ग्रहण कर लेता है।

शेरशाह में रीति-रिवाजों के कारण भाभी-देवर की पाक मुहब्बत एक समस्या बन जाती है। एक ओर भाई शेरशाह और दूसरी ओर पाक मुहब्बत दोनों में से एक को स्वीकारना निजाम के लिए नामुनकिन हो जाता है। आंतरिक संघर्ष निजाम के मन में हर पल निर्माण होता है। निष्कर्षत : विवेच्य नाटकों में रीतिरिवाजो के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण हो गयी है पर उसे सुलझाने का सही प्रयास सेठ जी ने किया है।

4.3.6 मनोवैज्ञानिक समस्याएँ -

मनुष्य कितना भी परिपूर्ण बनने की कोशिश करे उसमें कुछ न कुछ कमीयाँ रहती ही है। इसलिए वह अपूर्ण माना जाता है। मनुष्य अपनी अपूर्णता को पूर्ण करने में दिन-रात कार्यरत रहता है लेकिन पूर्णता सफल नहीं होता। हमेशा समस्या ग्रस्त मनुष्य होने के कारण उसके मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव 'समस्या' का पडता है। परिणाम स्वरूप व्यक्ति ग्लानि, कुण्ठाग्रस्त एवं अशांतिमय जीवन व्यतीत करता है। मन ही मन में आत्मप्रतारणा करता हुआ अपने आपको कभी-कभी नि:सहाय समझता है। ''मनोवैज्ञानिक समस्या व्यक्तिगत-सामाजिक अनेक कारणों की उपज है और उसका साक्षात्कार व्यक्ति-

विशेष की ही निर्यात है।"[31] मनोवैज्ञानिक समस्या किसी विशिष्ट जाति, धर्म, वर्ग विशेष तक सीमित न होकर हर एक मानव की आज हो गयी है। मनोबल के अभाव से ही मनोवैज्ञानिक समस्या का उद्भव होता है। मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण सेठ जी ने निम्नलिखित रूप से किया है। सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी हर एक नाटक में कोई न काई एक पात्र दिखायी देता है कि वह पूर्ण रूप से मनोवैज्ञानिक समस्या ग्रस्त है।

4.3.6.1 अतृप्त -

हर एक इन्सान को सभी सुख साधनों का उपभोग नहीं मिलता। किसी न किसी रूप से इन्सान अतृप्त ही रहता है। सेठ जी ने अपने नाटकों के हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह में अतृप्त इच्छा इन्सान किस हद्द तक घसेट कर ले जाती है इसका चित्रण सेठ जी ने विवेच्य नाटकों में किया है। 'हर्ष' नाटक में माधवगुप्त को पुत्रप्रेम कभी नहीं मिला; क्योंकि माधवगुप्त हर्ष को वह आदर्श राजा और सच्चा मित्र मानता है। माधवगुप्त की पुत्र प्रेम की इच्छा अधूरी ही रह गयी। दूसरी ओर गौड का राजा शशांक नरेन्द्रगुप्त को प्रजा का प्रेम नहीं मिला।

'शशिगुप्त' नाटक में सिकन्दर यूनान सम्राट की विश्वविजेता की इच्छा अतृप्त ही रह गयी और अन्त तक वह पूरी न हो पायी। "मै...मै... कदाचित जा रहा हूँ। देखो...देखो...भारत...भारत विजय किये बिना चैन न लेना। पर्व...पर्वतक से पूरा प्रतिकार... लेना...और... शशिगुप्त... शशिगुप्त को तो इस प्रकार की मौत मारना... जिस प्रकार... जिस प्रकार... आजपर्यन्त किसी को न मारा हो। शशि...शशिगुप्त... और सिकन्दर का इन्तकाल हो जाता है।"[32]

शेरशाह में भी अतृप्ति की समस्या प्रमुख रूप से दिखायी देती है। लाड को अन्त तक सच्चा प्रेम नहीं मिलता। चुनार किले के सुबेदार ताजखाँ ने भी दौलत के लिए लाड से विवाह किया था बाद में शेरशाह ने मुल्क की भलाई के लिए उसके साथ विवाह किया। लेकिन लाडबानू से सिर्फ निजाम ही प्यार करता है। लेकिन अन्त तक प्यार के अतृप्त

इच्छा से लाड पागल बन जाती है। " मैंने जिस्म का सौदा नहीं, अपनी तमन्नाओं का सौदा, अपने दिल का सौदा एक ही बार, एक ही लहमें में, मैंने एक ही शख्स निजाम से किया था, पाक मुहब्बत की थी।"[33] इस प्रकार इन्सान की अतृप्ति के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है यह विवेच्य नाटकों में दिखाया गया है।

4.3.6.2 कुण्ठा -

किसी भाव को हम न व्यक्त करते मन ही मन स्वयं उस घटना, प्रसंग और व्यक्ति के प्रति हमारे मन के अन्दर अनेक सवाल निर्माण होते है। सेठ जी कुण्ठा ग्रस्त व्यक्तियों में किस प्रकार की बेचैनी उनके मन में निर्माण होती है इसका वर्णन किया है। 'हर्ष' नाटक में ब्राह्मणों के मन में एक प्रकार की कुण्ठा निर्माण हो जाती है। विधवा बहन राज्यश्री को हर्ष राजा सम्राज्ञी बनाता है लेकिन ब्राह्मण उसका तीव्र विरोध करते है क्योंकि उनके मतानुसार विधवा स्त्री को समाज में स्थान नहीं है और वह विधवा को अशुभ मानते है इसी कारण ही उनके मन में एक प्रकार की कुण्ठा निर्माण हो जाती है। इस समस्या के कारण ही कुछ ब्राह्मण और शशांक नरेद्रगुप्त हर्ष राजा के खिलाफ हत्या का षड्यंत्र रचते है। साथ ही साथ गुप्तवंशज माधव गुप्त का पुत्र भी आदित्यसेन हर्षवर्ध्दन वंश का नाथ करना चाहता है।

अश्वक जाति का सरदार शशिगुप्त को हेलन मन ही मन चाहती है मगर सिल्यूकस पिताजी के जरिए हेलन को पता चलता है कि शशिगुप्त देश द्रोही है वह सिकन्दर से मिला हुआ है। तब फौरन देशद्रोही शशिगुप्त से विवाह न करने का निश्चय हेलन करती है। लेकिन कुछ समय बीत जाने के पश्चात सिकन्दर और पर्वतक से पता चलता है कि शशिगुप्त देशद्रोही नहीं है वह तो सिकन्दर की शरणागती स्वीकार कर योग्य समय की तलाश और चाणक्य की कूटनीति से भारत में एक साम्राज्य की स्थापना करना चाहता है। तब हेलन दुबारा शशिगुप्त से प्रेम करने लगती है। नन्द मगध का राजा विलासप्रिय और नर्तकियों में मग्न होने के कारण प्रजा के मन में एक प्रकार की कुण्ठा निर्माण हो जाती है।

भाई शेरशाह के प्रति निजाम के मन में कुण्ठा निर्माण होती है और निजाम कहता है - ''खुदा न खास्ता जंग में अगर आपको कुछ... आपको कुछ... जबान से वह गन्दी बात निकलना ही मुश्किल है...तो...तो ताजखाँ के बाद लाड जैसे आपकी हो गयी...उसी...उसी तरह आपके बाद मेरी...उक।''[34] यहाँ पर अपने भाई के प्रति निजाम ऐसी बुरी बाते कुण्ठाग्रस्त समस्या के कारण ही करता है। इस प्रकार इन्सान कुण्ठाग्रस्त होने के कारण अपने बंधनों को तोडकर किसी भी बात का विचार नहीं करता है।

4.3.6.3 घुटन या बदले की भावना -

हर इन्सान के मन में प्रतिशोध की, बदले की भावना रहती है। वह हर समय अनेक तर्क-वितर्क करके बुरी सी बुरी योजना बनाने में वह हर समय मग्न रहता है। उस व्यक्ती के प्रति बदला लेना चाहता है। अपने पूर्वज कुमारगुप्त का वध हर्ष ने किया था इसका बदला आदित्यसेन को लेना था। इसी बदले की समस्या ने पिता-पुत्र के प्यार को तोडा। इसी बदले के समस्या के कारण माधवगुप्त अपने पुत्र को अपने हाथों से फँसी देना चाहता है। बदले की आग ने शशांक नरेन्द्रगुप्त हर्ष राजा की हत्या करना चाहता है।

शशिगुप्त में शकटार मगध का निर्वासित राज कर्मचारी नन्द का बदला लेता है। मगध का राजा नन्द निर्दोष शकटार के सात पुत्रों को एक साथ मार देता है। ''शकटार धनुष लिये हुए दौडता आता है और एक के पश्चात एक छः बाण नन्द को मारता है।''[35] इस प्रकार बदले की भावना से शकटार त्रस्त होता है। साथ ही साथ शशिगुप्त सिकन्दर यूनान सम्राट को भारत से बाहर भेजकर ही निःश्वास लेना चाहता है।

'शेरशाह' नाटक में प्रमुख रूप से निजाम और लाड मन ही मन से एक दूसरे को चाहते है। दोनों किसी के भी सामने व्यक्त नहीं करते। साथ ही साथ ब्रहमादित्य के मदद से शेरशाह हुमायूँ से युध्द करता है। युध्द में शेरशाह की जीत होती है। इस प्रकार घुटन या बदले की भावना की मनोवैज्ञानिक समस्या अंत में क्या रंग दिखायी देती है ? इसका सजीव चित्रण हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह नाटकों में किया है।

4.3.6.4 लालसा :-

हर एक इन्सान के मन में लालसा रहती ही है, चाहे वह जीवन के प्रति, चाहें धन दौलत के प्रति या चाहे किसी व्यक्ति के प्रेम से हमें लालसा निर्माण हो जाती है। हर व्यक्ति लालसाप्रिय होता है। सेठ जी के मन में ही स्वाधीनता की लालसा रग-रग में दिखायी देती है। 'हर्ष ' नाटक में गुप्तवंशज शशांक नरेन्द्रगुप्त कूटनीति, कुप्रवृत्ति से आर्यवर्त साम्राज्य का राजा बनने की लालसा उसके मन में पैदा हो जाती है। इसके लिए विश्वासघात, फरेब और नैतिक मूल्यों को या किसी को जान से मारने में भी पीछे नहीं हटता। वह कहता है कि मैं कोई पाप नहीं कर रहा हूँ, अपने मुल्क की भलाई के लिए कर रहा हूँ। ऐसा शशांक नरेन्द्रगुप्त कहता है।

भारत भ्रमण करने की चीनी यात्री यॉन-चॉग की लालसा बहुत ही रहती है। वह हर एक व्यक्ति से हर्ष, राज्यश्री और गुप्तवंशज के प्रति जानकारी हासील करना चाहता है। "मौर्य के समय तो सारा भारत एक साम्राज्य के अंतर्गत था, गुप्तों के समय भी सारा आर्यवर्त एक साम्राज्य के अन्तर्गत रहा, फिर भी भारत में एक राष्ट्र का निर्माण क्यों न हुआ ?"[36] ऐसा सवाल यॉन-चॉग महाबलाधिकृत से अपने इच्छा के वास्ते करता है।

'शेरशाह' नाटक में शेरशाह प्रजा की चिंता रात-दिन करते रहते है। हिन्दू-मुस्लिम में एकता स्थापित करके नए साम्राज्य की स्थापना करना चाहते है। दूसरी ओर लाड की पाक-मुहब्बत निजाम को पागल बनाकर छोड देती है। यहाँ पर इन सभी घटनाओं से जीवन कितना व्यापक होता है यह सेठ जी ने इन इच्छा या लालसा समस्या के जरिए बताने का सही प्रयास किया है।

4.3.6.5 मनोबल के अभाव की समस्या :-

हर एक व्यक्ति के अपयश के पीछे मानसिक विकृती का प्रभाव रहता है। इसमें मनोबल के अभाव के कारण इन्सान को अपयश का सामना करना पडता है। सेठ जी ने विवेच्य नाटकों में विभिन्न पात्रों के जरिए से इस समस्या का चित्रण किया है। 'हर्ष' नाटक में शशांक नरेन्द्रगुप्त विश्वास घात करके यज्ञ के वक्त हर्ष की हत्या करना चाहता

है। लेकिन वह बीच में ही स्थाण्वीश्वर का सेनापति भण्डि के हाथों से युध्द में मारा जाता है। मनोबल के अभाव से लिया हुआ निर्णय कभी भी अच्छा नहीं रहता। आदित्यसेन पिता माधवगुप्त से ज्यादा विश्वास शशांक नरेन्द्रगुप्त पर रखता है इसी कारण आखरी वक्त आदित्यसेन को जंजीरें में लपेटकर बंदी बनाया जाता है।

'शशिगुप्त' नाटक में हेलन शशिगुप्त से प्यार करती है लेकिन शशिगुप्त देशद्राही है यह समझने के बाद वह अपना निर्णय तुरन्त बदल देती है और शशिगुप्त से विवाह न करने की प्रतिज्ञा करती है। यहाँ पर भी मनोवैज्ञनिक समस्या का जीता-जागता चित्रण हमें दिखायी देता है। साथ ही साथ सेठ जी के शेरशाह नाटक में प्रमुख रूप से इस समस्या का वर्णन दिखायी देता है।

शेरशाह को निजाम और लाड के प्रेम या पाक मुहब्बत का कभी पता तक नहीं चलता। आखरी वक्त तक निजाम में मनोबल के अभाव के कारण यह बात अपने बडे भाई शेरशाह को नहीं बता सकता। निजाम और लाड पूर्ण रूप से प्रेम में डूब गये है। निजाम भाभी के नकाब में छिपी हुई बानू से प्रेम करता है। वह पूरी कथा शेरखाँ को बताने जाता है। ''भाईसाहब...भाईजान, मुझ से एक गलती... बहुत बडी गलती हो गयी है, लेकिन... लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप मुझे माफ...।''[37] लेकिन शेरखाँ उस वक्त निजाम की बात की ओर ध्यान ही नहीं देता और शेरखॉ युद्ध के लिए चला जाता है। बाद में मनोबल के अभाव के कारण निजाम की कभी हिम्मत नहीं होती दुबारा लाड और अपने पाक मुहब्बत के बारे में अपने भाई शेरशाह से बात करने की। निष्कर्षत: मनोबल के अभाव के कारण सत्य बात भी लोगों को असत्य लग जाती है और अपने श्वेत चरित्र पर काला डाग लग जाता है।

4.3.7 नारी समस्या :-

आधुनिक युग में पुरूष प्रगतिशिल विचारों का समर्थक होते हुए भी संकीर्णता से आज भी ग्रस्त दिखायी देता है। वह नारी स्वतंत्रता को आज भी स्वीकार कदापि नहीं कर सकता। नारी के प्रति आज भी उसके मन के अविश्वास विदयमान है। डॉ. महेन्द्र भटनागर

की दृष्टि में - यों तो वर्तमान हिन्दू-समाज में समग्र नारी जीवन पुरूष वर्ग की तिरस्कार, दमन तथा उपेक्षा भावना का शिकार है लेकिन जीवन सबसे अधिक अत्याचार और शोषण की प्रतिमूर्ति एक मात्र विधवा ही है। घर और बाहर की समस्याओं से नारी का विकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ है। वह न तो पुर्ण रूप से पत्नी है, न तो कार्यकर्ता भारतीय समाज में नारी के साथ समस्या हमेशा जुडी रही है। इस प्रकार दिन-ब-दिन नारीयों की समस्याएँ बढती जा रही है। सेठ जी ने विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिक घटना होते हुए भी, आधुनिकता वादी नारी का चित्रण किया है।

हर्ष नाटक में प्रमुख नारी पात्र के रूप में राज्यश्री आ जाती है। राज्यश्री शिलादित्य (हर्ष) की बहन रहती है बाद में उत्तर भारत की सम्राज्ञी बनती है। राज्यश्री का विवाह हो जाता है लेकिन उसके पती के वध के पश्चात वह घर छोडकर जंगल में भाग जाती है। हर्ष राजा होते ही उसे खोजकर ले आता है और उसे स्थाण्वीश्वर की सम्राज्ञी बनाता है। विधवा स्त्री होते हुए भी सम्राज्ञी बनाने से शशांक नरेन्द्रगुप्त, आदित्यसेन और कुछ ब्राहमणों ने प्रखर विरोध किया।

साथ ही साथ अलका नामक स्त्री पात्र राज्यश्री के सहली के रूप में सेठ जी ने चित्रण किया है। अपने मन की व्यथा, जंगल का वर्णन और घर छोडकर जाने की वजह अलका को बता देती है। राज्यग्रहण करते वक्त भी राज्यश्री के पास अलका रहती है। बौध्द भिक्षूणी से उत्तर भारत की सम्राज्ञी कैसे बनी यह सब बाते राज्यश्री अलका को बता देती है। अलका एक सच्ची सखी के रूप में प्रस्तुत होती है।

जयमाला हर्ष की पालित पुत्री का नाम है। जयमाला गाना बहुत अच्छा गाती है। विवाह न करने से संतान के प्रति अतृप्त इच्छा को हर्ष पूर्ण करने के हेतु जयमाला को पुत्री मानता है। अपने स्वयं पुत्री से भी ज्यादा प्यार जयमाला को हर्ष राजा देता है। शैलबाला माधवगुप्त की स्त्री और आदित्यसेन की माता है। राज्यश्री, अलका, जयमाला और शैलबाला में देशभक्ति, कर्तव्यदान और स्वाभिमानी नारी पात्र के रूप में हमारे सामने आ जाती है।

4.4 निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि सेठ गोविन्ददास के विवेच्य ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटकों का प्रधान उद्देश राष्ट्रीय एकात्मत ा स्थापित करना, सर्वधर्म समभाव की भावना, देशप्रेम और एक साम्राज्य की स्थापना करना हैं। सेठ जी पर पाश्चात्य नाटककारों का प्रभाव होते हुए भी उन्होंने भारतीय संस्कृति को छोडा नहीं है। हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह नाटकों का कथानक अलग-अलग अंको में विभाजित है।

'हर्ष 'इस नाटक का प्रारंभ ही समस्या से होता है। इस में प्रमुख रूप से विधवा समस्या दिखायी देती है। लेकिन हर्ष अपनी विधवा बहन राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाकर पुरूषों के समान स्त्री को समान अधिकार देना चाहता है। सेठ जी ने आधुनिक नारी-समानता का समर्थन 'हर्ष ' नाटक में किया है। साथ ही साथ सामाजिक समस्याएँ, राजनीतिक और धार्मिक समस्याएँ महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। सेठ जी ने जो भी समस्याएँ ली है उन पर तार्किक शैली मैं बौध्दिक, मनोवैज्ञानिक एवं प्रकृतिवादी दृष्टी से विचार किया है।

'शशिगुप्त ' नाटक में सेठ जी ने अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। प्रमुख रूप से इस नाटक में तीन समस्याएँ है। नए ऐतिहासिक घटनाओं की खोज की समस्या, एक सम्राज्य की स्थापना और मुगल साम्राज्य का ऱ्हास की समस्या साथ ही साथ राजनैतिक समस्याओं में परकी य आक्रमण की समस्या महत्वपूर्ण मानी गयी है।

'शेरशाह ' नाटक में सेठ जी ने धार्मिक समस्याओं के साथ ही साथ सामाजिक समस्याओं का भी मार्मिक ढंग से उल्लेख किया है। हिन्दू-मूस्लिमों में एकता की समस्या, विश्वबन्धुत्व की भावना, राष्ट्रीय एकात्मता परकीय आक्रमण और स्वच्छंद प्रेम की समस्या का सजीव रूप में चित्रण किया है।

इस प्रकार सेठ जी ने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का वाद-विवाद विवेच्य ऐतिहासिक नाटको में प्रस्तुत किया है। उन्होंने समस्याओं पर तर्कपूर्ण आलोचना की है। उनका मत है कि हमें परकीय आक्रमणों को रोककर स्वाधीनता की माँग करनी चाहिए। मिथ्या, भावुकता तथा रोमांस की ओर से ध्यान हटाकर हमें व्यक्तिगत स्वतंत्र, साधना और देशभक्ति की ओर झुकना चाहिए।

संदर्भ सूची -

1. डॉ. विमला भास्कर, हिन्दी में समस्या साहित्य, पृ. 9
2. सं. नगेन्द्रनाथ वसु, हिनदी विश्वकोश - 23, पृ. 568
3. सं. सत्यप्रकाश वल्लभप्रसाद मिश्र, मानक अंग्रेजी - हिन्दी कोश, पृ. 1071
4. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 98
5. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 153
6. सेठ गोविन्ददास , शशिगुप्त, पृ. 53
7. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 50
8. वही, पृ. 140
9. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 144
10. मधुकर, पाक्षिक के मार्च 1945 के अंक से, पृ. 497
11. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 150
12. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 130
13. वही, पृ. 81
14. वही, पृ. 54
15. वही, पृ. 18
16. पी.डब्ल्यू.कुकर, राजकिय विचारवंत, पृ. 52, 53
17. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 83
18. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 50
19. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 37
20. वही, पृ. 109
21. डॉ. उषा भटनागर वृन्दावनलाल वमा के उपन्यासोंका सांस्कृतिक अध्ययन-पृ. 17
22. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 10

23. वही, पृ. 128
24. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 61
25. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 130
26. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 53
27. डॉ. रामधारिसिंह 'दिनकर' संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 611
28. डॉ. ज्ञानचन्द्र गुप्त, स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना, पृ. 125
29. सेठ गोविन्ददास, हर्ष, पृ. 87
30. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 144
31. डॉ. विणा गौतम, आधुनिक नाटकोंमे मध्यवर्गीय चेतना, पृ. 195
32. सेठ गोविन्ददास, शशिगुप्त, पृ. 122
33. सेठ गोविन्ददास, शेरशाह, पृ. 55
34. वही, पृ. 149
35. सेठ गोविन्ददास , शेरशाह,पृ. 140
36. सेठ गोविन्ददास,हर्ष, पृ. 107
37. सेठ गोविन्ददास , शेरशाह,पृ. 117